ASIAN JOURNAL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TECHNOLOGY Vol. 8 (3), July 2018: 6-8
ISSN (Print) : 2249-7374
Website: http://www.tspmt.com ISSN (Online): 2347-4947

RESEARCH ARTICLE

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यात्म एवं आध्यात्मिक बुद्धि का महत्व

अमिता जैन एवं राहुल जैन
शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, नागौर
Email: amitajainjuly1@gmail.com, jainrahul06081983@gmail.com

Received: 4th April 2018, Revised: 8th May 2018, Accepted: 12th May 2018

सारांश

अध्यात्म जीवन दृष्टि और जीवन शैली का समन्वय है। आज अध्यात्म सुन्दर शब्दों पर टिक गया है। जो जितना अध्यात्म के गूढ़ तत्वों को अलंकृत शैली में बोल सके, वह उतना ही बड़ा आध्यात्मिक व्यक्ति माना जा रहा है फिर इसके एक भी तत्व को भले ही अनुभव न किया गया हो। वस्तुतः अध्यात्म ऐसा नहीं है इसे ऐसा कर दिया गया है। अध्यात्म को वर्तमान स्थिति से उबारने के लिए आवश्यक है, कि इसे प्रयोगधर्मी बनाया जाए। अंतरंग जीवन संयमित हो और तपस्या की भट्टी में सतत् जलता रहे। आज भी वास्तविक आध्यात्मिक विभूतियाँ विद्यमान हैं।

मूल शब्दः *अध्यात्म, संयम, नैतिक मूल्य और साधना*

प्रस्तावना

अध्यात्म आज युग की आवश्यकता है। लगभग सभी चिन्तक, विचारक, वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक इसकी आवश्यकता का अनुभव करते हैं। आज अध्यात्म सुन्दर शब्दों पर टिक गया है जो जितना अध्यात्म के गूढ़ तत्वों को अलंकृत शैली में बोल सके, वह उतना ही बड़ा आध्यात्मिक व्यक्ति माना जा रहा है। फिर इसके एक भी तत्व को भले ही अनुभव न किया गया हो। वस्तुतः अध्यात्म ऐसा नहीं है इसे ऐसा कर दिया गया है। अध्यात्म एक वैज्ञानिक प्रयोग है, जो पदार्थ के स्थान पर जीवन के नियमों को जानना, समझना, प्रयोग करना और अन्त में जीवन जीने का तरीका सीखाता है। अध्यात्म जीवन दृष्टि और जीवन शैली का समन्वय है। यह जीवन को समग्र ढंग से न केवल देखता है, बल्कि इसे अपनाता भी है। वर्तमान युग में बहुत लोग अध्यात्म से निरन्तर अनभिज्ञ है, लेकिन वे ही अध्यात्म की भाषा बोल रहे हैं। यह कटु सत्य है कि आध्यात्मिक भाषा बोलने वाले कुछ लोगों का जीवन अध्यात्म से निरंतर अपरिचित, परन्तु भौतिक साधनों और भोग विलास में डूबा हुआ मिलता है। आज के तथाकथित कई अध्यात्मवेत्ता, भय, आशंका, संदेह, भ्रम से ग्रस्त है, जबकि अध्यात्म के प्रथम सोपान को इनका समूल विनाश करके ही पार किया जा सकता है। अध्यात्म को वर्तमान स्थिति से उबारने के लिए आवश्यक है, कि इसे प्रयोगधर्मी बनाया जाए। अध्यात्म के मूल सिद्धान्तों को प्रयोग की कसौटी पर कसा जाए। आध्यात्मिकता के बहिरंग और अंतरंग दो तत्व जीवन में परिलक्षित होने चाहिए। संयम और साधना दो अंतरंग तत्व है और स्वाध्याय और सेवा बहिरंग है। अंतरंग जीवन संयमित हो और तपस्या की भट्टी में सतत् जलता रहे। आज भी वास्तविक आध्यात्मिक विभूतियाँ विद्यमान हैं। परन्तु उनके पद्चिन्हों पर चलने का साहस कम ही लोग करते हैं। यही वह परिष्कृत अध्यात्म है, जो कहीं बाहर नहीं, हमारे ही अंदर है। हमें इसी की खोज करनी चाहिये।

उद्देश्य

1. आध्यात्मिकता से परिचित कराना।
2. भारतीय आध्यात्मिक मूल्य पवित्रता, युचिता और सात्विकता के प्रति जागरूकता लाना।
3. जीवन में शान्ति, अहिंसा, पवित्रता और चरित्र निर्माण का विकास करना।

अध्यात्म आज युग की आवश्यकता

आध्यात्मिकता का अर्थ किसी विशेष सम्प्रदाय से नहीं अपितु अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार कर्तव्य पालन करना है। गांधीजी ने अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को स्थान दिया। वे हर कार्य अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार करते थे। यदि जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाये तो परिवार, समाज व राष्ट्र का चहुँमुखी विकास संभव है। आज न्यायालय भी नैतिक मूल्यों के अभाव में सही निर्णय देने में असमर्थ हो रहे है। नैतिकता के अभाव में व्यक्ति के चरित्र में गिरावट आती जा रही है और अपराधों का ग्राफ निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इसलिये बच्चों को अच्छे संस्कारों तथा चरित्र निर्माण की नितान्त आवश्यकता है। आज के बच्चे ही कल का भविष्य है। अतः जीवन में शिक्ष के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को भी स्थान दें। हर माता–पिता को स्वयं का आचरण शुद्ध, सरल, पवित्र, मर्यादापूर्ण रखना चाहिए। आज जो संस्कार बच्चों में स्थापित होंगे, वे ही भविष्य में परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक होंगे। सत्यता, विवेक, करूणा, ईमानदारी, पवित्रता, प्रलोभनों से दूर रहना आदि नैतिक मूल्य हैं। इन नैतिक मूल्यों से जीवन में आध्यात्मिकता का जन्म होता है। एक आदर्श परिवार या देश के संचालन हेतु परिवार के सभी सदस्यों या देश के सभी नागरिकों में शिष्टाचार, सदाचार, त्याग, मर्यादा, परिश्रम की भावना आदि गुणों की आवश्यकता है। इन शील गुणों की अनुमोदना परिवार और राष्ट्र में शान्ति लायेगी। धर्म और आध्यात्मिकता एक सिक्के के दो पहलू है और एक दूसरे से संबंधित है, परन्तु फिर भी दोनों में

अंतर है, आध्यात्मिकता, सांसारिक भौतिकवाद से ऊपर है, जिसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती है। यह मानव मूल्य की आधारशिला है, जिस पर मानव आस्था और विश्वास करता है।

आज का मनुष्य आध्यात्मिकता से अधिक धर्म को महत्व दे रहा है। यह ठीक है कि धर्म के बिना मानव पशु समान है। परन्तु आज के युग में मनुष्य ने धर्म की भाषा को संकुचित कर दिया है। धर्म का अर्थ है धारण करने योग्य। आज धर्म का मतलब केवल मंदिरों, मस्जिदों में पूजा पाठ और माथा टेकने तक सीमित रह गया है। धर्म का सही उपदेश है कि शास्त्रों की रीति से अभ्यास करते हुये आध्यात्मिकता को बढ़ावा दिया जाये। लेकिन हम लोग धार्मिक कर्मकाण्डों में इतने उलझ गये हैं कि आध्यात्मिक दूरदृष्टि से भटक गये हैं।

आध्यात्मिकता का महत्व

आध्यात्मिक अनुमोदना व्यक्ति को आत्मानुशासित और नैतिकता से ओत–प्रोत करती है। धर्म सिखाता है कि कोई व्यक्ति पाठ पूजा करे या न करे, दान–पुण्य करे या न करे, लेकिन नैतिकता को आधार मानकर चले, मानवता को जीवन का श्रृंगार बनाये, यही अभीष्ट है।

अध्यात्म का नया अध्याय है, अणुव्रत। धर्म की मौलिकता को उजाकर करने वाला अणुव्रत व्यावहारिक चेतना विकसित करने वाला धर्म है। अणुव्रत धर्म समाज में शुद्ध आचार और शुद्ध विचार की बात करते हुये एक नया मार्ग तय करने की सोच बनाता है। अणुव्रत आत्मा का सशक्त धर्म है, जो चरित्र निर्माण के माध्यम से व्यक्ति सुधार की बात करता है। अणुव्रत आध्यात्मिक जीवन की वह कसौटी है जो जीवन जीने का धर्म एवं आत्मनिर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है। जिस पर चलकर व्यक्ति एक अच्छे इंसान के रूप में मानवता एवं समाज का भला कर सके। यह जीवन में शान्ति, अहिंसा, पवित्रता और चरित्र निर्माण का उद्भव स्थल है।

आध्यात्मिक बुद्धि का सम्प्रत्यय

अपने आप में स्थिर रहना बाह्य वस्तुओं तथा इन्द्रिय विषयों में अनासक्त, कामनाओं का समग्र त्याग, अपने आप में संतुष्ट रहने वाला, संतोषी, समत्व बुद्धि, आत्म बुद्धि को गीता में स्थितप्रज्ञ के नाम से जाना जाता है, आध्यात्मिक बुद्धि से तात्पर्य आत्मिक बुद्धि से हैं, आत्मा और बुद्धि का अंतर संबंध ही आत्मिक बुद्धि है। आध्यात्मिक बुद्धि से ही व्यक्ति को आत्मानुभूति व स्वानुभूति होती है। आध्यात्मिक बुद्धि सही व्यक्ति में पवित्रता, निर्मलता, शूचिता, परिष्कारिता, उज्जवलता, सात्विकता आदि सदगुणों से समाहित होती है। आत्मिक बुद्धि में अनासक्त भाव, अपरिग्रह की भावना तथा ममत्व, सेवा भावना आदि से ओत–प्रोत होती है। ज्ञान स्वयं पवित्र है, और हमारी चेतना को पवित्र बनाने वाला आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मिक ज्ञान है। आत्म विद्या का ज्ञान बुद्धि के अन्तर्मन से प्रस्फुटित होता है। आत्म बुद्धि का ज्ञान इन्द्रिय निरपेक्ष, आत्म सापेक्ष, वीतरागता सापेक्ष और ज्ञान से सम्पन्न होता है। आध्यात्मिक बुद्धि वाला व्यक्ति निष्काम कर्म, अनासक्त तथा आत्मलीन होकर कार्य करता है। आत्मबुद्धि को मनुष्य लक्ष्य में रखकर के वह अपना कार्य करता है। जिसकी प्रज्ञा संकल्प विकल्पों से मुक्त हो जाती है। वह व्यक्ति स्थिरप्रज्ञ या आत्मिक बुद्धि वाला कहलाता है। स्थिरप्रज्ञता की साधना अथवा वीतरागता की साधना का अभ्यास हो जाता है तो प्रसन्नता की प्राप्ति अपने आप हो जाती हैं। जिसमे साधना की गहराई होती है, आचरणों की ऊँचाई होती हैं। और जिसके विकार नष्ट हो जाते हैं उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती हैं। वह व्यक्ति स्थिर प्रजा या आध्यात्मिक बुद्धि से युक्त हैं। श्री कृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति मुझे प्राप्त होते हैं या परमात्मा को प्राप्त होते हैं। वे इन्द्रिय विषयों का त्याग करके समबुद्धि या आध्यात्मिक बुद्धि वाले बनते हैं। मनोज्ञ शब्द सुनने से राग और अमनोज्ञ शब्द सुनने से द्वेष हो तो मान लेना चाहिए कि समबुद्धि नहीं हैं। देखने में कोई आकर्षक रूप आ गया तो आसक्ति हो गयी और कोई वीभत्स रूप आ गया तो मन में घृणा का भाव आ गया। इसका मतलब समबुद्धि नहीं हैं। सुगंध आने से प्रियता और दुर्गंध आने से अप्रयिता का होना समबुद्धि लक्षण नहीं हैं। सर्दी के मौसम में अनुकूल गर्म स्पर्श होने पर राग आ गया और ठंडा स्पर्श होने पर द्वेष आ गया। तो समबुद्धि नहीं हैं। हमारे मन के अनुकूल हो या प्रतिकूल सबके प्रति समता रहे। इन्द्रिय विषयों के प्रति प्रियता अप्रियता का भाव न आये तो वह समबुद्धि अथवा आध्यात्मिक बुद्धि की स्थिति है। आध्यात्मिक बुद्धि विभिन्न कारकों जैसे विनम्रता करूणा व्यापक दृष्टिकोण और नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुये दुनिया के मुद्दों को हल करते हुये और उन पर नियंत्रण स्थापित करने का अधिकार देती है। शिक्षा के क्षेत्र में बौद्धिक विकास पर अधिक जोर दिया जाता है। लेकिन आध्यात्मिक बुद्धि समुचित विश्लेषण और विकास के साथ ही बौद्धिक विकास कर सकती है। आध्यात्मिक बुद्धि का अर्थ मात्र धार्मिकता से ओत–प्रोत नहीं समझा जाना चाहिये। यह तो मानव मस्तिष्क, मन तथा आत्मा की आन्तरिक तथा अन्तरंग क्षमता है। आध्यात्मिक बृद्धि ही वह बुद्धि है जो हम क्या है, हमारे जीवन का लक्ष्य क्या हैं। तथा जीवन के आदर्श और मूल्य क्या है आदि प्रश्नों के उत्तर ढूंढने में मदद करती है। व्यक्ति की संज्ञानात्मक और संवेगात्मक बुद्धि को एक उचित प्रकार की दशा और दिशा प्रदान कर उनका सर्वोत्तम उपयोग करने में मदद करती है ताकि हम अपनी प्रतिभाओं का उपयोग करते हुये स्वविवेक के आधार पर अपने तथा दूसरों के जीवन को खुशहाल बना सके। अध्यात्म अपने से कुछ बड़े के साथ संबंध स्थापित करने के लिये मानव की जन्मजात जरूरत है। यह अहंकार व स्व की भावनाओं से परे है। आध्यात्मिक नेतृत्वकर्ता प्रेमपूर्ण, दयालु क्षमाशील, शांतिपूर्ण, साहसी, ईमानदार, उदार श्रद्धायुक्त, बुद्धिमान और प्रेरणादायक हो। अध्यात्म से परिपूर्ण व्यक्ति तटस्थ, आस्थावान तथा कर्मशील होता है। आध्यात्मिक बुद्धि दूसरों को समझने की योग्यता का प्रतिनिधित्व करती है आध्यात्मिक बुद्धि विवेक और करूणा के साथ व्यवहार करते समय स्थिति की परवाह किये बिना भीतरी और बाहरी शांति बनाये रखने की क्षमता है।

श्रमण का अर्थ होता है श्रमपूर्वक जीवन जीने वाला अर्थात् आत्मनिर्भर व्यक्ति। जैन धर्म में श्रमण और श्रमणियों के जीवन में आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन और साधना के दर्शन होते है। उनके प्रत्येक कार्य में पवित्रता, युचिता और सात्विकता की

पराकाष्ठा होती हैं यह भी आध्यात्मिक बृद्धि का प्रखर रूप है। मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है। बुद्धि का सदुपयोग व दुरूपयोग दोनों संभव है। जब बुद्धि का ज्ञान इन्द्रियों के ज्ञान की सीमा को जान लेता है तथा मन एवं इन्द्रियों को विकृत होने से बचाता है, तो बुद्धि का सदुपयोग है जब हम अपने अधिकार व दूसरों के कर्तव्यों पर दृष्टि रखते हैं तो बुद्धि का दुरूपयोग है। सदुपयोग करने वाली बुद्धि विवेक सम्पन्न एवं प्रज्ञाशील होती है। विवेक सम्पन्न बुद्धि वस्तु में होने वाले सतत् परिवर्तन का दर्शन कराती है एवं उसके प्रति अनासक्ति का भाव उत्पन्न करती है।

उपसंहार

भारतीय आध्यात्मिकता में ही भारतीय संस्कृति का निवास है, यही भारतीयता है, इसलिए ही भारतीय संस्कृति एक मात्र आध्यात्मिक अति मानसिक, अति बौद्धिक संस्कृति है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण का विधान करते हुये सृष्टि की रक्षा और संहार करता है, उसी भाँति भारतीय संस्कृति भी सद्गुणों की सृष्टि का संरक्षण एवं कल्याण विरोधी दुष्ट तत्वों के विनाश की व्यवस्था करती है। वस्तुतः यह मानवीय विश्वव्यापी, सर्वलोक हितकारिणी संस्कृति है जो इसका अपनी अज्ञानता के कारण विरोध करता है, उसका भी यह संस्कृति कल्याण करने की ही सोचती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. धींग दिलीप (मार्च 2018): 'जिनवाणी', हिन्दी मासिक पत्रिका सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर, पृष्ठ संख्या 60।
2. जैन धर्मचन्द (फरवरी 2018): 'जिनवाणी', हिन्दी मासिक पत्रिका सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर, पृष्ठ संख्या 5–6।
3. मुर्डिया, सुनिता (2014): 'आध्यात्मिक बुद्धि', हिमांशु पब्लिकेशन्स, हिरण मगरी, उदयपुर, पृ.सं. 3 से 6।
4. आचार्य महाप्रज्ञ (2005): 'अहिंसा के अछूते पहलू', जैन विश्वभारती, लाडनूं, नागौर, राजस्थान।
5. राजस्थान पत्रिका (10 जून 2018):, वीक एण्ड पृ.सं. 4।